जब बाइबल इंसानों ने लिखी है तो हम उस पर क्यों भरोसा करें?

प्रश्न:
बाइबल तो मनुष्यों ने लिखी है जैसे पौलुस, पतरस, मूसा, दाऊद और अन्य। तो फिर हम कैसे मान लें कि जो उन्होंने लिखा है, वह सच है? क्या पता यह केवल उनके अपने विचार हों? जब यह किताब मनुष्यों के हाथों से लिखी गयी है, तो हमें उस पर क्यों विश्वास करना चाहिए?

उत्तर:
इसका उत्तर पाने के लिए पहले बाइबल का यह वचन पढ़ें:

यूहन्ना 14:11
“मुझ पर विश्वास करो कि मैं पिता में हूँ और पिता मुझ में
है। यदि तुम ऐसा नहीं मान सकते तो इन कामों को देखो और
उन्हीं के कारण विश्वास करो।”

यहाँ यीशु हमें समझाते हैं कि यदि हम केवल उनके शब्दों से विश्वास करने में कठिनाई महसूस करते हैं, तो हमें उनके कामों यानी चमत्कारों और अद्भुत कार्यों को देखकर विश्वास करना चाहिए। काम खुद यह सिद्ध करते हैं कि उनके शब्द सच्चे हैं।

जब बाइबल इंसानों ने लिखी है तो हम उस पर क्यों भरोसा करें?

इसी तरह, यदि हमें बाइबल के लेखकों पर भरोसा करने में संदेह हो, तो हमें उनके लिखे हुए वचनों के फल देखने चाहिए। उन वचनों ने करोड़ों लोगों का जीवन बदल दिया है बीमार चंगे हुए हैं, पाप क्षमा हुए हैं और लोगों को नया जीवन मिला है। यही प्रमाण है कि यह वचन परमेश्वर से हैं।

एक उदाहरण:
मान लीजिए आपको भौतिकी की एक किताब दी जाती है जिसमें यह सूत्र लिखा है कि विमान कैसे बनाया जाता है। पहले तो यह केवल शब्द और गणना मात्र लगते हैं। कोई यह सोच सकता है कि यह सब गढ़ा हुआ है। लेकिन जब कोई उसी सूत्र के अनुसार विमान बनाता है और वह सचमुच उड़ता है, तब यह साफ हो जाता है कि किताब का लिखा सच था।

ठीक वैसे ही हम पौलुस, पतरस या दाऊद के शब्दों को केवल कल्पना मान सकते हैं। लेकिन जब हम देखते हैं कि उनके लिखे वचन आज भी लोगों के जीवन में वही असर करते हैं, जिनका उन्होंने उल्लेख किया था, तो हमें मानना पड़ता है कि उनके शब्द सत्य हैं।

बाइबल कहती है कि यीशु के नाम से दुष्ट आत्माएँ निकलती हैं। आज हज़ारों लोग इसका अनुभव कर चुके हैं बिलकुल वैसे ही जैसा लिखा है।

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

जब बाइबल इंसानों ने लिखी है तो हम उस पर क्यों भरोसा करें?

या फिर देखें प्रेरितों के काम 2:38:
“पतरस ने उनसे कहा, ‘तुम अपने पापों से मन फिराओ और तुम में
से हर एक, यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा ले, ताकि तुम्हारे
पाप क्षमा हो जाएँ। तब तुम्हें पवित्र आत्मा का वरदान मिलेगा।’”

यह प्रतिज्ञा आज भी पूरी हो रही है। असंख्य लोग पवित्र आत्मा का अनुभव कर चुके हैं, और आप भी कर सकते हैं।

अब सोचिए यदि कोई कहे कि वह वैज्ञानिक, जिसने विमान का सिद्धांत दिया था, झूठा है, जबकि आसमान में विमान उड़ रहे हैं तो क्या आप उसे समझदार कहेंगे? बिल्कुल नहीं। उसी तरह, यदि कोई बाइबल की शिक्षाओं को झूठा कहे, जबकि उनके परिणाम सबके सामने स्पष्ट दिखाई देते हैं, तो यह आत्मिक अंधकार है।

इसीलिए बाइबल कहती है:

2 पतरस 1:20–21
“सबसे पहले तुम यह जान लो कि शास्त्र की कोई भी भविष्यवाणी किसी की निजी व्याख्या से नहीं हुई। क्योंकि भविष्यवाणी
कभी भी किसी मनुष्य की इच्छा से नहीं आई, बल्कि पवित्र आत्मा से प्रेरित होकर परमेश्वर की ओर से मनुष्यों ने बातें

जब बाइबल इंसानों ने लिखी है तो हम उस पर क्यों भरोसा करें?

कहीं।”

इसलिए बाइबल मनुष्यों की कल्पना नहीं है। यह परमेश्वर का वचन है, जिसे पवित्र आत्मा की अगुवाई में चुने हुए लोगों ने लिखा।

अगर अब तक आप सोचते थे कि बाइबल केवल इंसानों की किताब है, तो आज अपने दृष्टिकोण को बदलें। इसे पढ़ें—मनुष्यों के शब्दों के रूप में नहीं, बल्कि परमेश्वर के जीवित वचन के रूप में।

प्रभु यीशु आपको आशीष दे!

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp